

भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या : 963
25 जुलाई, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

फेविपिराविर के नैदानिक परीक्षण

† 963. डॉ. मल्लू रवि:

क्या स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (एनआईवी), पुणे द्वारा चांदीपुरा वायरस (सीएचपीवी) के उपचार के रूप में फेविपिराविर के उपयोग के संबंध में हाल ही में किए गए पूर्व-नैदानिक अध्ययनों की जानकारी है;

(ख) यदि हाँ, तो पशु मॉडलों में वायरस के खात्मे और उत्तरजीविता लाभों के संदर्भ में इन अध्ययनों के क्या परिणाम देखे गए हैं;

(ग) क्या सरकार का विचार सीएचपीवी प्रभावित क्षेत्रों में मानव उपयोग के लिए फेविपिराविर के नैदानिक परीक्षण शुरू करने का है और यदि हाँ, तो इसका ब्यौरा क्या है और इसकी समय-सीमा क्या है और इसके लिए जिम्मेदार एजेंसियां कौन-सी हैं; और

(घ) किसी विशिष्ट एंटीवायरल उपचार के अभाव में सीएचपीवी संक्रमण के प्रबंधन के लिए वर्तमान प्रोटोकॉल क्या हैं;

(ङ) सरकार द्वारा विशेष रूप से बच्चों में इसकी उच्च मृत्यु दर को ध्यान में रखते हुए सीएचपीवी के लिए अनुसंधान और दवा विकास में तेजी लाने के लिए क्या सहायता दी गई है?

उत्तर
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ख): भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) ने सूचित किया है कि आईसीएमआर-राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (ICMR-NIV), पुणे ने चांदीपुरा वायरस (CHPV) से संक्रमित वेरो कोशिकाओं में फेविपिराविर की एंटीवायरल गतिविधि का आकलन करने के लिए एक पायलट अध्ययन किया है और इसके एंटीवायरल प्रभावों का प्रकटन किया है। 320µM फेविपिराविर सांद्रता पर CHPV की वृद्धि का पूर्ण अवरोध देखा गया। इसके अलावा, चांदीपुरा संक्रमित CD1 चूहों में फेविपिराविर का एंटीवायरल प्रभाव भी प्रदर्शित हुआ क्योंकि संक्रमण के बाद 7 दिनों तक 300 मि.ग्रा./किग्रा./दिन की दर से फेविपिराविर की मौखिक खुराक देने पर सभी चूहे जीवित रहे।

(ग): आईसीएमआर ने बताया है कि चांदीपुरा रोग की छिटपुट घटना के कारण इसकी प्रभावकारिता सिद्ध करने के लिए नैदानिक परीक्षण चुनौतीपूर्ण हो गया हैं।

(घ): एम्स और आईसीएमआर ने बताया है कि प्रबंधन में मुख्य रूप से शीघ्र पहचान करना, सहायक नैदानिक देखभाल और लक्षणात्मक उपचार शामिल है। अस्पताल में भर्ती मरीजों, विशेषकर बच्चों, का उपचार अंतःशिरा द्रव, ज्वरनाशक, आक्षेपरोधी और सेरेब्रल इडेमा को नियंत्रित करने के उपायों से किया जाता है, जिसमें आवश्यकता पड़ने पर आईसीयू की सहायता भी शामिल है। प्रयोगशाला की पुष्टि आरटीपीसीआर और आईजीएम एलिसा (IgM ELISA) के माध्यम से की जाती है। प्रकोप की छिटपुट प्रकृति के कारण, निगरानी और शीघ्र मामले की सूचना देना आवश्यक है और इसका पालन किया जा रहा है। निवारक उपाय वेक्टर नियंत्रण और विकर्षक और कीटनाशक-उपचारित जालों के माध्यम से व्यक्तिगत सुरक्षा को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित हैं।

(ङ): भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) और गुजरात राज्य के स्वास्थ्य विभाग को साथ लेकर एक बहु-केंद्रित अनुसंधान पहल शुरू की है, ताकि रोग के रोगजनन, संचरण की गतिशीलता और संभावित कीट या पशु भंडारों की व्यापक जांच की जा सके।
